# सातवें दशक के बाद हिंदी के कथा साहित्य में राजनीतिक यथार्थ

## (१९७० से २००० तक)

## SATVE DASHAK KE BAD KE HINDI KATHA-SAHITY MEIN RAJANEETIK YATHAARTH
## (1970 SE 2000 TAK)

# पीएच.डी. (हिन्दी) शोधप्रबंध की
# कार्य योजना (SYNOPSIS)


शोधनिर्देशिका

**डॉ. सुमा टी रोडनवर**

अध्यक्ष
हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र
विश्वविद्यालय कॉलेज
मंगलूरु – 575001

शोधार्थी

**पाटील तानाबाई सुभाष**

अनुक्रमांक: 154968531
स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु
मंगलूरु – 575001

Research Guide
**Dr Suma T. Rodanwar**
Chairman
Dept of Postgraduate Studies and Research in Hindi
University College Mangaluru
Mangaluru - 575001

Researcher
**Patil Tanabai Subash**
Reg. No. 154968531
Dept of Postgraduate Studies and Research in Hindi
University College Mangaluru
Mangaluru - 575001


: अनुसंधान केंद्र :

**स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र**
**विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु, मंगलूर विश्वविद्यालय**

DEPARTMENT OF POSTGRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY

**2022**

# कार्य योजना

# Synopsis

उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा मुझे मेरे घर से ही प्राप्त हुआ।जिसके कारण मुझे आगे पढने के लिए रूचि जगी शोध कार्य करने की सलाह मेरे घर के सदस्यों के सहयोग और समर्थन से मिला।विशेष रूप से यह सहयोग मेरे  पिता जी और भाई से मिला।जिसके परिणाम स्वर्रो मैंने शोध कार्य में प्रवेश लिया।बचपन से मुझेदेश-विदेश के साहित्य में रूचि थी जिसके कारण मैंने कथा कहानी उपन्यास पढ़ना शुरू किया।जिसके परिणामस्वरूप मेरी जिज्ञासा समय के साथ और बढ़ते गई।यह संयोग ही था कि एम.ए.अध्ययन के दौरान हमारे पाठ्यक्रम था जो मेरे अर्तमन को बहप्रभावितकिया।इससे हमें शोध विषय का चुनाव करने में बहुत सहजता का बोधअ हुआ इससे हमे हमे बहुत सहुलियत और सहायता मिली।

कथा-साहित्य में राजनीति यह मेरे शोध ग्रन्थ का विषय हैं।मेरी शोध निदेशिका आदरणीय गुरूवर डॉ सुमा टी.रोडनवार जी से विचार-विमर्श के उपरान्त मेरे इस विषय में रूचि के कारण मेरे अनुरोध को स्वीकार करते हुए अपनी सहमती प्रदान की।

मेरे पिता जी राजनीति में बहुत सक्रिय रहते थे जिन्हें देखकर मेरी भी ईच्छा और दिलचस्पी इस ओर रही।आज के इस बदलते परिवेश में भी निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं।फ़िर भी राजनीति अपना अलग अस्तित्व और पहचान कायम किए हुए हैं।

भारत के समाज में राजनीति संस्कृति का प्रचलन आज ज्यादा बढ़ गया है लेकिन आज इस क्षेत्र में कुछ निंदनीय और ग़ैर सामाजिक कार्य भी हो रहे है।सामाजिक आर्थिक राजनैतिक न्यायपालिका और शिक्षा के क्षेत्र में साथ-साथ कृषि और रोज़ी-रोज़ग़ार के क्षेत्र में राष्ट्रीय चुनौतीयों पर ग़ैर राजनीति क्षेत्र के विद्वानों द्वारा कि गई टिप्पंणियां आज के राजनितिज्ञों के लिए निंदा के समान हैं।इस के लिए यह कहा जाता है कि यह प्रश्न राष्ट्रीय मान स्वाभिमान का है इसलिए इसपर राजनीति नहीं होनी चाहिए लेकिन देखा जाय तो आज के समय में राजनीति जैसे महत्वपूर्ण शब्द ने अपना अस्तित्व ही खो दिया हैं।राजनीति का मतलब लड़ाई-झगड़ा पक्षपात जाति-धर्म भाषा-क्षेत्र और सत्ता संघंर्ष का हो गया है लेकिन पहले ऐसा नहीं था।राजनीत राजव्यवस्था से जूड़ी लोकोकपयोगी और जनसेवा का एक प्रमुख माध्यम और उपकरण था।ऋगवेद से लेकर उत्तरवैदिक काल बाल्मिकि रामायण महाभारत से लेकर कौटिल्य और अशोक तक राजनीति का मतलब लोकमंगल ही था।
राजनीति को फ़िर से जनकल्याण का माध्यम बनाना होगा तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

मेरे शोध निर्देशिका गुरूवर **डॉ सुमा टी.रोडनवार** के निर्देश में **कथा साहित्य में राजनीति विषय पर** शोध कार्य करने की प्रेरणा और दिशा निर्देश मिला जिसे मैंने सहज रूप से स्वीकार करते हुए इस महत्वपूर्ण विषय पर उनके कुशल नेतृत्व में इस कार्य को सरलता से पूरे मनोयोग के साथ किया।

मुझे अपार स्नेह और सहयोग के साथ उन्होने इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया समय-समय कठिन विषय को अपने ज्ञान से सुलझाते हुए मुझे प्रेरित और प्रोत्साहित करते रही इस स्नेह और सहयोग के लिए मैं हृदय से आजीवन आभारी रहुँगी।

**प्रथम अध्याय-**

**हिंदी कथा साहित्य में यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप।**

**द्वितीय अध्याय-**

**स्वतंत्रता संग्राम में सातवें दशक तक का राजनीतिक यथार्थ एवं हिंदी साहित्य का परिदृश्य।**

**तृतीय अध्याय-**

**सातवे दशक से वीसवी सदी तक का राजनैतिक यथार्थ एवं हिंदी साहित्य का परिदृश्य।**

**चतुर्थ अध्याय-**

**सातवें दशक के बाद के हिंदी कहानियों में चित्रित राजनैतिक यथार्थ।**

**पंचम अध्याय-**

**सातवे दशक के बाद के हिंदी उपन्यासों में चित्रित राजनैतिक यथार्थ।**

**षष्ठ अध्याय-**

**सातवे दशक के बाद के हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त भाषा शैली।**

**उपसंहार-**

**परिशिष्ट-संदर्भ ग्रंथ सूची**

## प्रथम अध्याय-

## "हिंदी कथा साहित्य में यथार्थ की अवधारणा एवं स्वरूप"

यथार्थ इसके लिए अंग्रेजी में **(REALTY)** रियॉलिटी शब्द प्रयुक्त होता हैं।संस्कृत में इसके समानार्थी शब्द 'सत्य' हिंदी में यथार्थ और वास्तव आदि का प्रयोग किया जाता हैं।इन सब में यथार्थ ही **(REALTY)** रियॉलिटी का समानार्थी हैं यथार्थ शब्द दो शब्दों की संधी से निर्मित हैं।जीवन साहित्य और यथार्थ ऐसी अवधारणाये हैं जिन्हें एक शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता।हिंदी कथा साहित्य में यथार्थ का संबंध किसी ना किसी रूप में हर समय **रहा।भारत के प्राचीन ग्रन्थ पंचतंत्र,कादंबरी,दशकुमार चरित,सिंहासन आदि रचनाओं में यथार्थ परक रूप मिलता हैं।**इनकी विरासत को आधुनिक हिंदी साहित्य ने ग्रहण किया हैं।यथार्थ और हिंदी कथा साहित्य की स्थिति हिंदी साहित्य में खासकर सातवे दशक के बाद के साहित्य में यथार्थ रूप में पनपता हैं। कहानी और उपन्यास जैसी विधाओं के आगमन के पीछे नवीन समाजिक परिस्थियां तथा मनुष्य के दुख और तनाव को केन्द्रित कर साहित्य को सृजित किया गया।हिंदी कथा साहित्य में भी यथार्थ को महत्वपूण सिंद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

## द्वितीय अध्याय-

## "स्वतंत्रता संग्राम से सातवें दशक तक का राजनैतिक यथार्थ एवं हिंदी कथा साहित्य का परिदृश्य"

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का जो कालखंण्ड था वो भारतीय सामाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था।इसके पहले हम देखते हैं कि बंगाल में विद्रोह हुआ था जिसे संन्यासी विद्रोह के नाम से जाना जाता हैं।इसके बाद दक्षिण भारत के विजयनगरम में सन 1794 विद्रोह हुआ था। मद्रास राज्य,आंध प्रदेश,मैसुर,और बिशाखापट्टनम में असंतोष के कारण अंग्रेजो के खिलाफ़ कई विद्रोह हुए किंतु इन विद्रोहों में संगठन का अभाव था यह राष्ट्रीय स्वरूप नहीं धारण कर पाया जिसके कारण अंग्रेजो द्वारा इसे जल्दी ही दबा दिया गया।इस तरह हम देखते है कि **सन 1748 से लेकर सन 1947 तक** दो शताव्दियों के लगातार स्वतंत्रता संग्राम के फ़लस्वरूप माउंटबेन के

योजना के अनुसार **15 अगस्त 1947** को देश आजाद हुआ।भारत एक प्रभुसत्ता समपन्न गणतंत्र राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र हुआ।सैकड़ो वर्ष के अंधकार के बाद देश में एक नए तरह के सूर्य का उदय हुआ।

इस अध्याय में मैंने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर सातवें दशक के हिंदी कथा साहित्य में राजनीति परिदृश्य का पाठालोचन किया हैं।

## तृतीय अध्याय-

### “सातवें दशक से वीसवी सदी तक का राजनैतिक यथार्थ एवं हिंदी कथा साहित्य का परिदृश्य”

रिश्वतख़ोरी भाई-भतीजावाद जैसे राजनीतिक का तेज़ी से अपराधीकरण,कालाबज़ारी,आदि के मूल में चुनाव की राजनीति है।इस लिए इस पद्धति पर और कितना भरोसा किया जायेगा।प्रजातांत्रिक शासन को नक़ार कर फ़ौजी सरकार बनाने की बात भी कुछ लोग करते है,कुछ अमेरिका की तरह अध्यक्षीय शासन प्रणाली का आग्रह करते हैं।इसमें कोई संदेश नहीं की पिछले कुछ वर्षों से राजनैतिक जीवन के क्षेत्र में भ्रष्टाचार फ़ैला हैं उसका अपराधीकरण हुआ है जनाताभिमुख शासन देनें की प्रवृति ग़ायब होती जा रही है।

## चतुर्थ अध्याय-

### ‘सातवें दशक के बाद के हिंदी कहानियों में राजनीतिक यथार्थ’

सातवें दशक के बाद के कहानियों में राजनीतिक परिस्थितयों में जो परिवर्तन आया,इसी परिवेशगत हलचल का प्रभाव रचनात्मक धरातल पर पड़ा इस दशक में

प्रवेश करते-करते हिंदी कहानियों की मूल प्रवृति और यथार्थ पहले के कहानियों से बिलकुल अलग पड़ जाती हैं।इससे यह अभिप्राय यह नहीं कि इस समय की कहानी अपने पूर्व  परंपरा से कट के रह जाती हैं **बल्कि प्रेमचंद की विकासशील परम्परा को नया स्वरूप देती हैं**।इस दशक के कहानियों में भिन्नता केवल बाहरी नहीं हैं।वह भीतरी स्तर पर आए पर्वरतनों से सम्बद्ध हैं।जिस समय महात्मा गाँधी ने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया उस समय लोगो ने अपने स्वार्थ की प्राप्ती के लिए राजनीति को स्वार्थ सिद्धी का अस्त्र बना लिया।गांधी को सत्य अहिंसा सत्याग्रह सिद्धांत को लागू कर भारतीय राज में चेतना का मंत्र  फुका।अपनी बात मनवाने के लिए सत्याग्रह को विशेष महत्व दिया।यही उदेश्य लेकर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम लड़ा। गांधी जी ने राजनीतिक संघर्ष के दौरान सत्य अहिंसा और सत्याग्रह के द्वारा नैतिक बल का प्रयोग किया।इन सिद्धांतों का न केवल भारतीयों पर गहरा प्रभाव पड़ा बल्कि इसको अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनाया गया।किंतु सातवें दशक के बाद के राजनीतिक में बिल्कुल विपरीत अवस्था देखने को मिलता हैं इन्ही परिस्थियों को कहानिकारों ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया हैं।

## पंचम अध्याय-

## “सातवें दशक के बाद हिंदी उपन्यासों में राजनीतिक यथार्थ”

हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों का उदेश्य मुख्यत; परिवेश में बदलते मानव मूल्यों को प्रतिष्ठित करना हैं।आम जनता में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्टीय भूमिका पर विश्व प्रभुत्व,एकता,और मानवता का जयघोष करना हैं।वस्तुत; राजनीतिक उपन्यासों में समाजिक परिवेश ही अवतरीत होता हैं।जो स्वयं को पुष्ट कर रचना की पुष्टी करता हैं।स्वतंत्रता के पूर्व जो राजनीतिक उपन्यास लिखा गया उसमें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का विस्तार से वर्णन किया गया हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भी अनेक उपन्यास इस विषय पर लिखे गये।हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों में सभी तरह के समस्याओं और परिवेश को विस्तृत रूप में चित्रित किया गया हैं।उन उपन्यासों में राजनीतिक

यथार्थ तथा समाजिक समस्याओं के तरफ़ और भी ध्यान आकर्षित करता हैं। जातीय असमानता भ्रष्टाचारी शासन व्यवस्था का विरोध अधिक असमानता आदि मुख्य विषय रहा। जिन्हें राजनीति परिप्रेक्षय में प्रस्तुत किया किया गया हैं।

## षष्ठ अध्याय-

## ”सातवें दशक के बाद के हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त भाषा शैली।

भाषा शैली एक ऐसा विषय बस्तु हैं जिसके माध्यम से भाव तथा विचार का आदान-प्रदान होता हैं।मनुष्य हरेक भाषा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को सम्पन्न करता हैं।

हिंदी साहित्य शास्त्र में संस्कृत और पाश्चात्य साहित्य सौन्दर्यशास्त्र पर आधारित हैं।परंतु हिंदी साहित्य सौन्दर्य परम्परा पर आधरित हैं।परंतु हिंदी राजनीतिक साहित्य परंपरा साहित्य के परंपरा से अपना भिन्न सौनर्यशास्त्र बनाया हैं,जो परिवर्तनशीलता के नियमों में विश्वास करता हैं।वह ऐसे राजनीतिक कथा-साहित्य को लिखता हैं,जो

यथार्थ की पृष्टभूमि पर टीका हैं।साहित्य उसकी भाषा में विरोधाभाष भी दिखाई पड़ता हैं यही इसकी अच्छाई और विशेषता हैं।पर यह समाज के सच्चाई और यथार्थ को व्यक्त किया हैं।इस काल खंण्ड के साहित्य में जनसमान्य और आम-अवाम के भाषा का प्रयोग किया गया हैं।जिसमें उनके अनुभव मानसिंक स्थिति को प्रस्तुत किया गया हैं।

इस अध्याय में लेखको के कथा-साहित्य में प्रयुक्त भाषागत वैविधता को अध्ययन का माध्यम बनाया गया हैं। सातवें दशक के कथा साहित्य में भाषागत वैविधता का अध्ययन किया गया हैं।

सातवें दशक में कथा साहित्य की विशेषताएं जैसे बिंब विधान,प्रतीक साद्दष्य विधान शैली में वर्णात्मक,विश्लेषणात्मक संवेदनात्मक तथा आत्मकथात्मक शैली पर

अध्ययन किया गया है।इस दशक के कथा साहित्य में मुहाबरे,लोकोक्तियों पर भी अध्ययन किया गया हैं।

## निष्कर्ष-

सातवें दशक के बाद के कथा साहित्य में राजनीतिक यथार्थ का राष्ट्र के नव निर्माण के साथ अनेक समाजिक,राजनैतिक,नैतिक आर्थिक, समस्याए को अपने साहित्य में स्थान दिया हैं,लेकिन दु;ख की बात हैं कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी ये समस्याए देश और समाज के सामने मुँह वाए खड़ी हैं जिससे मुक्त होना आज भी देश के सामने कठिन चुनौती हैं।सातवें दशक के साहित्यकरों ने जिस बात की ओर देश और समाज का ध्यान आकृष्ट किया था वो हु-बहू आज भी चुनौती के रूप में खड़ी हैं।अशिक्षा,बीमारी,ग़रीबी,असमानता,जातिये विभेद,छुआछुत सब आज भी कायम हैं।सातवें दशक के कथा साहित्य जीवन की व्याख्या मुख्यत; मार्कसवादी,समाजवादी,गांधीवादी राष्ट्रवादी सिद्धांतों के बिंदुओं पर आधारित हैं। इस शोध प्रबंध में मुख्यत; आपातकाल और उसके पृष्टभूमि पर कथा साहित्य की

पाठालोचना की गई हैं। ऐसा स्वभाविक भी हैं क्योंकि आपातकाल की संभावना को बुद्धिजीवियों ने बहुत गहराई से अनुभव किया था और इसके प्रभाव और कमियों को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया था।इस काल में लोकतंत्र का अस्तित्व ही संदेहास्पद बन गया था।कार्यपालिका विधायिका न्यायपालिका सब कुछ पंगु हो गया था।देश संशय के बादल में घीरा हुआ था जिसका यथार्थ वर्णन सातवें दशक के बाद के साहियकारों ने एक नये विचार और चिंतन के साथ अपने लेखन में स्थान दिया हैं।देश,एक,तरफ़,जातिवाद,सम्प्रदायिकता,अशिक्षा,बेरोजगारी,आतंकवाद,नक्सलवाद,भाई -भतीजावाद,परिवारवाद,भ्रष्टाचार और आंतरिक सुरक्षा जैसे मुद्धों से आतंकित हैं।दूसरी तरफ़ शांति-सुरक्षा,प्रेम-स्नेह भाईचारा साम्प्रदायिक सौहार्द्र,और राष्ट्रीय सुरक्षा के भाव बोध से जनता को एक करना एक कठिक चुनौती हैं ऐसे समय में साहित्यक

पहल और इसकी समझ और चेतना को आगे करना और भी जरुरी है क्योंकि जब कार्यपालिका,न्यायपालिका और विधायिका तथा धर्म अपने उतरदायित्वों के निर्वहन में फ़ेल हो जाता हैं तो समाज को एक नई दिशा देने का कार्य साहित्य करता हैं। आज के दौर में सातवे दशक के बाद के जैसे साहित्य की अनिवार्यता और भी बढ़ जाती हैं।